विचार बिन्दु

कलाकार प्रकृति का प्रेमी होता है अर्थात वह उसका दास भी है और स्वामी भी। –अज्ञात

शास्त्रीय संगीत व पश्चिमी पॉप के घालमेल से लुभाना

अपने जीवनकाल में ऊंची सफलताएं और सम्मान पाने वाले तबला वादक ज़ाकिर हुसैन का पिछले दिनों सेन फ्रांसिस्को, अमरीका में निधन हो गया, जहां के वे रहने वाले हो गये थे। इस बड़े संगीतज्ञ ने अपने जीवनकाल में वह सब कुछ हासिल किया जिसका सपना हर कलाकार देखता है। जाकिर हुसैन की विरासत में हमें संगीत की अनोखी नवीनता तथा सांस्कृतिक मेल–जोल का महारत शामिल मिलता है, जिसे 'भारतरत्न' से अलंकृत सितारवादक पंडित रविशंकर की धारा से निकला माना जा सकता है। मनोरंजन के बाज़ार की दुनिया के चार ग्रैमी पुरस्कार उनकी अंतरराष्ट्रीय पहचान को और बुलंदियां दे गये। जैज़, रॉक और वैश्विक ताल के साथ पारंपरिक भारतीय लय का मिश्रण करके उन्होंने संगीत की आधुनिक दुनिया पर अपनी छाप बनाई जिसका प्रभाव वादकों की नई युवा पीढ़ी पर निश्चित रूप से पड़ा और इक्कीसवीं सदी की नई पीढ़ी ने उन्हें अब तक के सबसे महान तबला वादक के रूप में मनवा लिया। उनके निधन पर मीडिया में शोक की जिस प्रकार की लहर बही उसे यदि वह दिवंगत कलाकार देख पाता तो स्वयं भी गर्व करता। ऐसा लगा कि मीडिया ने अपना वह कलंक धो डाला है कि वह भारतीय शास्त्रीय कलाकार को मामूली जगह देता है तथा राजनेताओं और धनपतियों के ही मर्सिये पढ़ता है। हालांकि ज़ाकिर हुसैन को दी गई सभी श्रद्धांजलियों और श्रद्धांजलि आलेखों या चर्चाओं में वे सारे अतिरेक थे जिसमें आज का मीडिया धुरंधर है। इसलिए यह कवरेज देख कर कोई भी यह मानने लग सकता है कि ज़ाकिर हुसैन न होते तो तबला ही न होता। उनको ऊंचे तख्त पर बिठाने के लिए लोगों ने तबले के उस्ताद अल्लाह रक्खा खां को भी इसलिए याद कर लिया कि वे ज़ाकिर हुसैन के पिता थे। पंडित रविशंकर की भांति ज़ाकिर हुसैन ने भी आधुनिक समय के श्रोताओं की नब्ज पहचान ली थी कि उन्हें धूम–धड़ाका चाहिये। भारतीय शास्त्रीय संगीत का लंबा आलाप नई पीढ़ी को उबाता है। इस समझ का उन्हें भरपूर लाभ मिला, भले ही उसके लिए उन्हें परंपरागत भारतीय शास्त्रीय परंपराओं से थोड़ा हटना पड़ा। कोई पूछ सकता है कि किसी ने कभी पश्चिमी क्लासिकल के साथ पॉप संगीत की जुगलबंदी सुनी है? मगर हमारे संगीतज्ञ अपना रुतबा जमाने के लिए ऐसा करते हुए उसे भारतीय शास्त्रीय संगीत को विस्मृत होने से बचाना मानते हैं। शास्त्रीय संगीत में कुछ नया, उसके प्रतिमानों को अपनाए रख कर किया जा सकता है। अमरीका के पास अपना कोई क्लासिकल संगीत नहीं हैं। वहां सब बाहर का है जो अधिकतर अफ्रीकी फोक है या पॉप है। बाहर से लिये हुए को मिलाकर बाज़ार में बेचने का हुनर तीन सौ साल के इतिहास वाले अमरीका को खूब आता है। भारत की तरह ही हजारों सालों के इतिहास की थाती लिए यूरोप में ललित कलाओं की शास्त्रीयता मिलती है। वहां कोई घालमेल नहीं है। मगर इस समय भारतीय लोगों पर बाज़ार हावी है। इसीलिए ज़ाकिर हुसैन को हम अपने खुद के समय की चकाचौंध में खोया पाते है। ऐसे संगीतकारों का तर्क होता है कि वे ऐसा करके नई पीढ़ी को विस्मृत होते भारतीय शास्त्रीय संगीत की तरफ फिर से ला रहे हैं। ज़ाकिर हुसैन ने तबले से डमरू और शंख की ध्वनियां निकाल कर ऐसा ही किया।

भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल एक कला रूप नहीं है, बल्कि एक व्यापक आध्यात्मिक, भावनात्मक और बौद्धिक अनुभव है, जो अत्यंत गहरा है, जिसे जीवन भर खोजा जा सकता है। एक बार बीबीसी से इसी कलाकार ने कहा भी था कि भारतीय शास्त्रीय संगीत स्टेडियम म्यूज़िक नहीं है। यह ऐसा म्यूज़िक नहीं है जिसे 50,000 लोग आपको दूर से देखें, आप स्क्रीन पर नज़र आयें। उस टाइप का नहीं है। ये एक बड़ा ही अंतरंग प्रकार का संगीत है। इसमें आंखों से आंखें मिलती हैं और संगीत का वार्तालाप होता है। मगर ग्रैमी के लिए इसकी दरकार नहीं होती। वहां बाज़ार में बिकने वाला संगीत होता है। ज़ाकिर हुसैन उन संगीतकारों में शुमार रहे, जो उसे श्रोताओं के लिए केवल मनोरंजन का एक साधन बना देने के बाज़ार के औज़ार बने। वे पहले तबला वादक नहीं थे जिन्होंने इस वाद्य को एकल वाद्य के रूप में पहचान दिलाई। पं. रविशंकर के साथ संगत करते हुए भी उनके पिता अल्लाह रक्खा खां ने एकल प्रदर्शन दिए थे। तबले को एकल वाद्य के रूप में जिस अद्भुत कलाकार ने प्रतिष्ठा दिलाई वह था अहमद जान थिरकवा (1891–1976)। मगर वह तबले पर थाप देते हुए अपने सिर को झटका देकर अपने बाल हवा में नहीं लहराता था और न वह किसी ब्रांड की चाय की पत्ती बेचने के लिए वाह उस्ताद बना था। ज़ाकिर हुसैन वाह उस्ताद थे। ज़ाकिर हुसैन ने एक बार कहा था कि उन्होंने वरिष्ठ गुरुजनों से सीखा मगर जब मैं बाहर निकला तो युवा होने के साथ–साथ मेरा दिमाग़ ज़्यादा खुला था। इस खुले दिमाग से उन्होंने सीखा कि व्यावसायिक मंच पर प्रदर्शन कैसे करना है। इस प्रदर्शन में लोकप्रियता हासिल करना प्राथमिकता होती है। वे नये ज़माने के साथ चले और नये ज़माने के सुनने वालों को वह दिया जिनकी सुनने की चॉइस बाज़ार ने तय कर रखी थी।

> **जाकिर हुसैन की प्रसिद्धि और सफलता ने उन्हें कई महत्वाकांक्षी युवा तबला वादकों के लिए आदर्श बना दिया। इससे प्रतिभाशाली संगीतकारों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार हुई है, जिनके प्रदर्शन में निपुणता और गति पर जोर तो होता है किन्तु संगीत की सूक्ष्मता और शास्त्रीय परंपरा के गहरे पहलू कमजोर हो जाते हैं। ज़ाकिर हुसैन ने जो दिशा अपनाई है, उसके बारे में आलोचनाएं भी हुई हैं, भले ही वे दबे स्वरों में रही।**

ऐसा भी नहीं है कि किसी काल खंड में स्थिर हो जाना ही शास्त्रीयता होती है। कम से कम भारतीय संगीत के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता। भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह विशेषता है कि इसमें हमेशा नए की गुंजाइश रहती है और संगीत के पंडित और उस्ताद हमेशा नया करते रहे हैं, खासकर रागों के प्रदर्शन में। संगीतकार अक्सर हर बार जब वे किसी राग को बजाते हैं, तो हर बार उसकी अनूठी व्याख्या करते हैं, जिससे एक निश्चित ढांचे के भीतर व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और सहजता की अनुमति होती है। यह रचनात्मक स्वतंत्रता नवाचार को बढ़ावा देती है और संगीत को गतिशील बनाए रखती है, जिससे यह अपनी पारंपरिक जड़ों को बनाए रखते हुए विकसित होता जाता है। मगर इसका अर्थ यह नहीं है कि तबले से तालियों की आवाज़ें निकाली जाए। व्यावसायिक संगीत परिदृश्य में ज़ाकिर हुसैन की लोकप्रियता ने पारंपरिक तबला शैली को व्यापक अपील देने के लिए सरलीकृत कर दिया। इससे भारतीय शास्त्रीय तबला वादन की गहन जटिलताओं और बारीकियों के क्षरण के साथ आकर्षक या सुलभ लय को ही बढ़ावा मिला है। जाकिर हुसैन की प्रसिद्धि और सफलता ने उन्हें कई महत्वाकांक्षी युवा तबला वादकों के लिए आदर्श बना दिया। इससे प्रतिभाशाली संगीतकारों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार हुई है, जिनके प्रदर्शन में निपुणता और गति पर जोर तो होता है किन्तु संगीत की सूक्ष्मता और शास्त्रीय परंपरा के गहरे पहलू कमजोर हो जाते हैं। ज़ाकिर हुसैन ने जो दिशा अपनाई है, उसके बारे में आलोचनाएं भी हुई हैं, भले ही वे दबे स्वरों में रही। फिर भी ज़ाकिर हुसैन की डिस्कोग्राफी लय और धुन का एक समृद्ध ताना–बाना है, जो एक कलाकार के रूप में उनकी बहुमुखी प्रतिभा को जरूर दर्शाता है। 1970 के दशक में अपनी शुरुआती रिकॉर्डिंग के बाद से, हुसैन ने विभिन्न शैलियों के कई प्रसिद्ध संगीतकारों और कलाकारों के साथ संगत की। उनके कुछ शुरुआती कामों में गिटार के उस्ताद बृज भूषण काबरा के साथ 'परफेक्ट पार्टनरशिप – गिटार एंड तबला' (1978) और वसंत राय के साथ 'इवनिंग रागास' (1979) शामिल हैं। इन एल्बमों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अन्य संगीत परंपराओं के साथ मिलाने के लिए भविष्य का मंच तैयार किया। आर्थिक खुलेपन की नीतियों के उभार के साथ 1980 के दशक के दौरान और उसके बाद जब सब–कुछ बदल रहा था तब हिन्दुस्तानी संगीत उससे अछूता कैसे रह सकता था। बाज़ार के कंधों पर ज़ाकिर हुसैन लगातार ऊंचाइयां छूते चले गये। हालांकि उस काल में उन्होंने राहुल सारिपुत्र के साथ 'फुटप्रिंट्स इन द स्काई' (1981) और बृज भूषण काबरा के साथ 'द मैजिक ऑफ म्यूजिक' (1982) जैसे एल्बम बनाए तथा 'सुर ताल' (1991) में प्रसिद्ध सारंगी कलाकार सुल्तान खान के साथ मिलकर मांड की खुशबू भी बिखेरी। किन्तु नई सदी में वे विदेशी बगीचों की बयार का आनंद लेने लगे। मिकी हार्ट के साथ मिलकर बनाए गए 'ग्लोबल ड्रम प्रोजेक्ट' (2007) जैसे एल्बमों ने दुनिया भर की लय और ताल का मिश्रण के प्रति हुसैन के वैश्विक दृष्टिकोण को उड़ान दी। इस एल्बम ने ग्रैमी पुरस्कार जीता और विश्व संगीत के नवप्रवर्तक के रूप में उन्हें प्रतिष्ठा दी। बाद में बेला फ्लेक और एडगर मेयर के साथ रिकॉर्ड किए गए 'द मेलोडी ऑफ़ रिदम' (2009) और डेव हॉलैंड और क्रिस पॉटर के साथ 'गुड होप' (2019) जैसे एल्बमों के जरिए वे संगीत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार दूर तक चले गये।

सिने संगीत की अपनी जरूरत होती है वहां भी इस कलाकार ने अपनी इसी क्षमता को दर्शाया। फिल्म स्कोर में अपने प्रत्यक्ष योगदान के अलावा, हुसैन कई संकलनों और सहयोगी कार्यों में भी दिखाई दिए, जैसे कि 'द रफ गाइड टू रविशंकर' (2003) और 'द रफ गाइड टू इंडियन क्लासिकल म्यूजिक' (2014)। वे ऐसे रफ गाइड के रूप में बाज़ार की पहली पसंद थे। इसी बाज़ार के लिए उन्होंने बेला फ्लेक और एडगर मेयर के साथ 'एज़ वी स्पीक' (2023) में ब्लूग्रास, जैज़ और शास्त्रीय भारतीय लय को जोड़ कर बाजार को निहाल किया। हुसैन सात बार बाज़ार के सिरमौर ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामांकित हुए और चार बार ग्रैमी जीते। उन्होंने 2024 में वह 66वें ग्रैमी पुरस्कार में एक ही रात में तीन ग्रैमी पुरस्कार जीतने वाले पहले भारतीय संगीतकार बनकर इतिहास भी रचा।

अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राष्ट्र निर्माण के "अटल" आदर्श की शताब्दी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूं...लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरूं? अटल जी के ये शब्द कितने साहसी हैं...कितने गूढ़ हैं। अटल जी, कूच से नहीं डरे...उन जैसे व्यक्तित्व को किसी से डर लगता भी नहीं था। वो ये भी कहते थे... जीवन बंजारों का डेरा आज यहां, कल कहां कूच है..कौन जानता किधर सवेरा...आज अगर वो हमारे बीच होते, तो वो अपने जन्मदिन पर नया सवेरा देख रहे होते। मैं वो दिन नहीं भूलता जब उन्होंने मुझे पास बुलाकर अंकवार में भर लिया था...और जोर से पीठ में धौल जमा दी थी। वो स्नेह...वो अपनत्व...वो प्रेम...मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है।

आज 25 दिसंबर का ये दिन भारतीय राजनीति और भारतीय जनमानस के लिए एक तरह से सुशासन का अटल दिवस है। आज पूरा देश अपने भारत रत्न अटल को, उस आदर्श विभूति के रूप में याद कर रहा है, जिन्होंने अपनी सौम्यता, सहजता और सहृदयता से करोड़ों भारतीयों के मन में जगह बनाई। पूरा देश उनके योगदान के प्रति कृतज्ञ है। उनकी राजनीति के प्रति कृतार्थ है।

21वीं सदी को भारत की सदी बनाने के लिए उनकी एनडीए सरकार ने जो कदम उठाए, उसने देश को एक नई दिशा, नई गति दी। 1998 के जिस काल में उन्होंने पीएम पद संभाला, उस दौर में पूरा देश राजनीतिक अस्थिरता से घिरा हुआ था। 9 साल में देश ने चार बार लोकसभा के चुनाव देखे थे। लोगों को शंका थी कि ये सरकार भी उनकी उम्मीदों को पूरा नहीं कर पाएगी। ऐसे समय में एक सामान्य परिवार से आने वाले अटल जी ने, देश को स्थिरता और सुशासन का मॉडल दिया। भारत को नव विकास की गारंटी दी।

वो ऐसे नेता थे, जिनका प्रभाव भी आज तक अटल है। वो भविष्य के भारत के परिकल्पना पुरुष थे। उनकी सरकार ने देश को आईटी, टेलीकम्यूनिकेशन और दूरसंचार की दुनिया में तेजी से आगे बढ़ाया। उनके शासन काल में ही, एनडीए ने टेक्नॉलजी को सामान्य मानवी की पहुंच तक लाने का काम शुरू किया। भारत के दूर–दराज के इलाकों को बड़े शहरों से जोड़ने के सफल प्रयास किये गए।

वाजपेयी जी की सरकार में शुरू हुई जिस स्वर्णिम चतुर्भुज योजना ने भारत के महानगरों को एक सूत्र में जोड़ा वो आज भी लोगों की स्मृतियों पर अमिट है। लोकल कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए भी एनडीए गठबंधन की सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना जैसे कार्यक्रम शुरू किए। उनके शासन काल में दिल्ली मेट्रो शुरू हुई, जिसका विस्तार आज हमारी सरकार एक वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट के रूप में कर रही है। ऐसे ही प्रयासों से उन्होंने ना सिर्फ आर्थिक प्रगति को नई शक्ति दी, बल्कि दूर–दराज के क्षेत्रों को एक–दूसरे से जोड़कर भारत की एकता को भी सशक्त किया।

जब भी सर्व शिक्षा अभियान की बात होती है, तो अटल जी की सरकार का जिक्र जरूर होता है। शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मानने वाले वाजपेयी जी ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जहां हर व्यक्ति को आधुनिक और गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले। वो चाहते थे भारत के वर्ग, यानि ओबीसी, एससी, एसटी, आदिवासी और महिला सभी के लिए शिक्षा सहज और सुलभ बने।

उनकी सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए कई बड़े आर्थिक सुधार किए। इन सुधारों के कारण भाई–भतीजावाद में फंसी देश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिली। उस दौर की सरकार के समय में जो नीतियां बनीं, उनका मूल उद्देश्य सामान्य मानवी के जीवन को बदलना ही रहा।

उनकी सरकार के कई ऐसे अद्भुत और साहसी उदाहरण हैं, जिन्हें आज भी हम देशवासी गर्व से याद करते है। देश को अब भी 11 मई 1998 का वो गौरव दिवस याद है, एनडीए सरकार बनने के कुछ ही दिन बाद पोकरण में सफल परमाणु परीक्षण हुआ। इसे 'ऑपरेशन शक्ति' का नाम दिया गया। इस परीक्षण के बाद दुनियाभर में भारत के वैज्ञानिकों को लेकर चर्चा होने लगी। इस बीच कई देशों ने खुलकर नाराजगी जताई, लेकिन तब की सरकार ने किसी दबाव की परवाह नहीं की। पीछे हटने की जगह 13 मई को न्यूक्लियर टेस्ट का एक और धमाका कर दिया गया। 11 मई को हुए परीक्षण ने तो दुनिया को भारत के वैज्ञानिकों की शक्ति से परिचय कराया था। लेकिन 13 मई को हुए परीक्षण ने दुनिया को ये दिखाया कि भारत का नेतृत्व एक ऐसे नेता के हाथ में है, जो एक अलग मिट्टी से बना है।

उन्होंने पूरी दुनिया को ये संदेश दिया, ये पुराना भारत नहीं है। पूरी दुनिया जान चुकी थी, कि भारत अब दबाव में आने वाला देश नहीं है। इस परमाणु परीक्षण की वजह से देश पर प्रतिबंध भी लगे, लेकिन देश ने सबका मुकाबला किया। वाजपेयी सरकार के शासन काल में कई बार सुरक्षा संबंधी चुनौतियां आईं। करगिल युद्ध का दौर आया। संसद पर आतंकियों ने कायरना प्रहार किया। अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले से वैश्विक स्थितियां बदलीं, लेकिन हर स्थिति में अटल जी के लिए भारत और भारत का हित सर्वोपरि रहा।

जब भी आप वाजपेयी जी के व्यक्तित्व के बारे में किसी से बात करेंगे तो वो यही कहेगा कि वो लोगों को अपनी तरफ खींच लेते थे। उनकी बोलने की कला का कोई सानी नहीं था। कविताओं और शब्दों में उनका कोई जवाब नहीं था। विरोधी भी वाजपेयी जी के भाषणों के मुरीद थे। युवा सांसदों के लिए वो चर्चाएं सीखने का माध्यम बनतीं। कुछ सांसदों की संख्या लेकर भी, वो कांग्रेस की कुनीतियों का प्रखर विरोध करने में सफल होते। भारतीय राजनीति में वाजपेयी जी ने दिखाया, ईमानदारी और नीतिगत स्पष्टता का अर्थ क्या है। संसद में कहा गया उनका ये वाक्य... सरकारें आएंगी, जाएंगी, पार्टियां बनेंगी, बिगड़ेंगी मगर ये देश रहना चाहिए...आज भी मंत्र की तरह हम सबके मन में गूंजता रहता है।

वो भारतीय लोकतंत्र को समझते थे। वो ये भी जानते थे कि लोकतंत्र का मजबूत रहना कितना जरुरी है। आपातकाल के समय उन्होंने दमनकारी कांग्रेस सरकार का जमकर विरोध किया, यातनाएं झेली। जेल जाकर भी संविधान के हित का संकल्प दोहराया। की स्थापना के साथ उन्होंने गठबंधन की राजनीति को नए सिरे से परिभाषित किया। वो अनेक दलों को साथ लाए और को विकास, देश की प्रगति और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का प्रतिनिधि बनाया।

पीएम पद पर रहते हुए उन्होंने विपक्ष की आलोचनाओं का जवाब हमेशा बेहतरीन तरीके से दिया। वो ज्यादातर समय विपक्षी दल में रहे, लेकिन नीतियों का विरोध तर्क और शब्दों से किया। एक समय उन्हें कांग्रेस ने गद्दार तक कह दिया था, उसके बाद भी उन्होंने कभी असंसदीय शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया।

उन में सत्ता की लालसा नहीं थी। 1996 में उन्होंने जोड़–तोड़ की राजनीतिना चुनकर, इस्तीफा देने का रास्ता चुन लिया। राजनीतिक षड्यंत्रों के कारण 1999 में उन्हें सिर्फ एक वोट के अंतर के कारण पद से इस्तीफा देना पड़ा। कई लोगों ने उनसे इस तरह की अनैतिक राजनीति को चुनौती देने के लिए कहा, लेकिन पीएम अटल बिहारी वाजपेयी शुचिता की राजनीति पर चले। अगले चुनाव में उन्होंने मजबूत जनादेश के साथ वापसी की।

संविधान के मूल्य संरक्षण में भी, उनके जैसा कोई नहीं था। डॉ. श्यामा प्रसाद के निधन का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा था। वो आपात के खिलाफ लड़ाई का भी बड़ा चेहरा बने। इमरजेंसी के बाद 1977 के चुनाव से पहले उन्होंने 'जनसंघ' का जनता पार्टी में विलय करने पर भी सहमति जता दी। मैं जानता हूं कि ये निर्णय सहज नहीं रहा होगा, लेकिन वाजपेयी जी के लिए हर राष्ट्रभक्त कार्यकर्ता की तरह दल से बड़ा देश था, संगठन से बड़ा, संविधान था।

हम सब जानते हैं, अटल जी को भारतीय संस्कृति से भी बहुत लगाव था। भारत के विदेश मंत्री बनने के बाद जब संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देने का अवसर आया, तो उन्होंने अपनी हिंदी से पूरे देश को खुद से जोड़ा। पहली बार किसी ने हिंदी में संयुक्त राष्ट्र में अपनी बात कही। उन्होंने भारत की विरासत को विश्व पटल पर रखा। उन्होंने सामान्य भारतीय की भाषा को संयुक्त राष्ट्र के मंच तक पहुंचाया।

राजनीतिक जीवन में होने के बाद भी, वो साहित्य और अभिव्यक्ति से जुड़े रहे। वो एक ऐसे कवि और लेखक थे, जिनके शब्द हर विपरीत स्थिति में व्यक्ति को आशा और नव सृजन की प्रेरणा देते थे। वो हर उम्र के भारतीय के प्रिय थे। हर वर्ग के अपने थे।

मेरे जैसे भारतीय जनता पार्टी के असंख्य कार्यकर्ताओं को उनसे सीखने का, उनके साथ काम करने का, उनसे संवाद करने का अवसर मिला। अगर आज बीजेपी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है तो इसका श्रेय उस अटल आधार को है, जिस पर ये दृढ़ संगठन खड़ा है।

उन्होंने बीजेपी की नींव तब रखी, जब कांग्रेस जैसी पार्टी का विकल्प बनना आसान नहीं था। उनका नेतृत्व, उनकी राजनीतिक दक्षता, साहस और लोकतंत्र के प्रति उनके अगाध समर्पण ने बीजेपी को भारत की लोकप्रिय पार्टी के रूप में प्रशस्त किया। श्री लालकृष्ण आडवाणी और डॉ. मुरली मनोहर जोशी जैसे दिग्गजों के साथ, उन्होंने पार्टी को अनेक चुनौतियों से निकाल कर सफलता के सोपान तक पहुंचाया। जब भी सत्ता और विचारधारा के बीच एक को चुनने की स्थितियां आईं, उन्होंने इस चुनाव में विचारधारा को खुले मन से चुन लिया। वो देश को ये समझाने में सफल हुए कि कांग्रेस के दृष्टिकोण से अलग एक वैकल्पिक वैश्विक दृष्टिकोण संभव है। ऐसा दृष्टिकोण वास्तव में परिणाम दे सकता है।

आज उनका रोपित बीज, एक वटवृक्ष बनकर राष्ट्र सेवा की नव पीढ़ी को रच रहा है। अटल जी की 100वीं जयंती, भारत में सुशासन के एक राष्ट्र पुरुष की जयंती है। आइए हम सब इस अवसर पर, उनके सपनों को साकार करने के लिए मिलकर काम करें। हम एक ऐसे भारत का निर्माण करें,जो सुशासन, एकता और गति के अटल सिद्धांतों का प्रतीक हो। मुझे विश्वास है, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के सिखाए सिद्धांत ऐसे ही, हमें भारत को नव प्रगति और समृद्धि के पथ पर प्रशस्त करनें की प्रेरणा देते रहेंगे।

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी।

शिल्पग्राम महोत्सव "एक भारत श्रेष्ठ भारत" का प्रतीक है : गुलाब चंद कटारिया

- **पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने शिल्पग्राम का दौरा किया**
- **राजस्थानी गुर्जर समुदाय के चरी डांस में सिर पर जलती आग वाली चरी लिए नृत्यांगनाओं ने रोमांचित किया**

उदयपुर, (कासं)। पंजाब के राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि शिल्पग्राम महोत्सव जहां "एक भारत श्रेष्ठ भारत" का प्रतीक है, वहीं यहा देश के कोने–कोने से अपने उत्पाद लेकर आने वाले आर्टिजन कई वर्षों से "वोकल फॉर लोकल" का संदेश देते हैं। कटारिया मंगलवार शाम यहां हवाला रानी रोड स्थित शिल्पग्राम में मुक्ताकाशी मंच पर सांस्कृतिक समारोह में जुटे सैकड़ों लोक कला प्रेमियों को संबोधित कर रहे थे।

कटारिया ने कहा कि यहां आने वाले कलाकार भी सम्मानीय हैं, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति को आज भी अक्षुण्ण रखे हुए हैं। इतना ही नहीं, ये लोक संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी देने वाली अहम कड़ी भी हैं। कटारिया ने कहा कि मुझे उदयपुर ने पाल–पोसकर बड़ा किया है, उदयपुर की जनता के प्यार की बदौलत ही आज मैं महामहिम बना हूं। मैं वादा करता हूं कि मैं कहीं भी रहूं, उदयपुर और मेवाड़ का गौरव नहीं गिरने दूंगा।

कार्यक्रम में शिल्पग्राम के मुक्ताकाशी मंच पर राजस्थानी गुर्जर समुदाय के चरी डांस में सिर पर जलती आग वाली चरी लिए नृत्यांगनाओं ने दर्शकों को खूब रोमांचित किया। उनको सिर पर चरी के साथ बैठकर, आगे की ओर झुक कर नृत्य करते देख दर्शकों ने खूब तालियां बजाकर दाद दी। वहीं, गुजराती आदिवासी डांस राठवा की धूम और रोमांचक प्रदर्शन पर दर्शक झूमने लगे। हिमाचल प्रदेश के सिरमौरी नाटी और कर्नाटक के देवी उपासना के नृत्य पूजा कुनिथा ने जहां शिल्पग्राम का माहौल भक्तिरस से सराबोर कर दिया। कश्मीर के लोक नृत्य रौफ में डांसर्स के सुंदर समन्वय और 'बुमरो बुमरो श्याम रंग बुमरो' के गीत–संगीत पर दर्शकों ने खूब लुत्फ उठाया। गुजरात के तलवार रास ने जहां देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वाले शहीदों के युद्ध कौशल के प्रदर्शन से दर्शक खूब रोमांचित हुए, तो मणिपुरी लाई हारोबा डांस ने लोगों का मन जीतने के साथ ही खूब तालियां बटोरी। इनके साथ ही उत्तर प्रदेश के ढेडिया डांस में डांसर्स की सुंदर भाव–भंगिमाओं ने दर्शकों को खूब रिझाया। प्रसिद्ध भवाई नृत्य में डांसर्स के रोमांचक करतब देख लोक कला प्रेमी हतप्रभ ही नहीं हुए, बल्कि जमकर हर खूबसूरत करतब पर जमकर तालियां बजाई।

वहीं, आदिवासी सहरिया स्वांग और पंजाबी लुड्डी ने भी दर्शकों की खूब वाहवाही लूटी। तो पश्चिम बंगाल के पुरुलिया छाऊ लोक नृत्य ने भी कला प्रेमियों का दिल जीत लिया।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि शिल्पग्राम में बुधवार को ओडिशा का भगवान जगन्नाथ को रिझाने के लिए किया जाने वाला नृत्य गोटीपुआ, रेगिस्तान का मांगणियार गायन, मणिपुर का पुंग ढोल चेलम और पश्चिम बंगाल का राय बेंस दर्शकों का मन मोहेंगे। इन लोक नृत्यों में गोटीपुआ और राय बेंस डांस में दर्शकों को एक्रोबेटिक एक्शन भी रिझाएंगे। इनके आलावा भारतीय पारंपरिक खेल मलखंभ के करतब देख कर भी मेलार्थी रोमांचित होंगे।

उदयपुर के शिल्पग्राम महोत्सव कलाकारों ने विभिन्न लोक कला नृत्यों की प्रस्तुति दी।

प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने से पहले छात्र को स्कूल से नहीं निकाल पायेगा प्रशासन

बीकानेर, (निसं)। स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने निशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार (संशोधन) नियम–2024 जारी किया है। इस संशोधित अधिनियम के तहत अब स्कूल प्रशासन किसी भी छात्र को प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने से पहले विद्यालय से नहीं निकाल पाएगा।

जानकारी के अनुसार निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा अधिनियम–2010 के भाग में छात्रों की परीक्षा और कक्षा में रोके जाने के नियम में परिवर्तन किया गया है। अब हर शैक्षणिक वर्ष में पांचवीं व आठवीं कक्षा की परीक्षा अनिवार्य होगी। वहीं संशोधित अधिनियम में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अगर कोई छात्र पदोन्नति से वंचित रहता है तो परिणाम जारी होने के दो माह के अंदर ही उसकी दोबारा से परीक्षा दिलवानी होगी। इसके बाद भी अगर छात्र परीक्षा को पास नहीं कर पाता तो उसे पांचवीं या आठवीं कक्षा में रोका जा सकता है। अब स्टूडेंट्स की सक्षमता को देखते हुए परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा।

केंद्र सरकार की ओर से जारी राजपत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि रोके गए छात्रों की एक सूची विद्यालय प्रशासन को बनानी होगी। स्कूल प्रशासन व शिक्षकों को उन छात्रों पर विशेष ध्यान देना होगा। समय–समय पर उनकी प्रगति की समीक्षा करनी होगी। छात्रों के लर्निंग गैप को दूर करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की ही होगी। प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य होगी। इसी वजह से प्रारंभिक शिक्षा को पूरा करने पर जोर दिया गया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 25 दिसम्बर, 2024

पौष मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र दिन 3:22 तक, अतिगंड योग रात्रि 9:46 तक, वणिज करण प्रातः 9:11 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–तुला, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरू–वृष, शुक्र–मकर, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज भद्रा प्रातः 9:11 से रात्रि 10:30 तक है। आज श्री पार्श्वनाथ जयन्ती, क्रिसमस दिवस, ईसा जयन्ती और बड़ा दिन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:52 तक। शुभ 11:09 से 12:27 तक, चर 3:01 से 4:19 तक, लाभ 4:19 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 5:36

मेष
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक मामलों में संयम रखना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। शुभ–मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में आज असंतोष बना रहेगा।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। यात्रा में परेशानी का भय है।